विज्ञान कहानी

सच का सीरम

●राजीव सक्सेना

दोपहर के दो बज चुके थे। प्रांजल अभी भी शाला से घर नहीं आया था जबकि शाला की छुट्टी ठीक एक बजे हो जाती थी।

माँ को चिन्ता होने लगी थी। उनकी निगाहें घड़ी की सुइयों पर अटकी थीं। वे सोचने लगीं – 'प्रांजल अभी तक घर क्यों नहीं आया?' प्रांजल के साथ पढ़ने वाले सभी बच्चे कब के घर आ गए थे। माँ ने शालाफोन किया तो उन्हें बताया गया कि छुट्टी हुए काफी देर हो गई है और प्रांजल भी जा चुका है।

अब तो माँ की धड़कनें दुगनी हो गई। वे पिताजी को फोन करने ही जा रही थीं कि दरवाजे की घण्टी बजने लगी। यह प्रांजल ही था। माँ ने देखा– प्रांजल के बाल अस्त–व्यस्त थे, कपड़े भी गंदे हो चुके थे और जूतों पर धूल की मोटी पर्त जमी थी। प्रांजल को देखते ही माँ सारी बात समझ गई।

उन्होंने पूछा– ''प्रांजल! तुम्हें शाला से घर आने में इतनी देर क्यों हुई?''

''ब...ब...वो बात यह है माँ कि आज शाला में गणित की अतिरिक्त कक्षा लगी थी। इसलिए देर हो गई।'' प्रांजल ने कहा

''झूठ मत बोलो प्रांजल! अगर

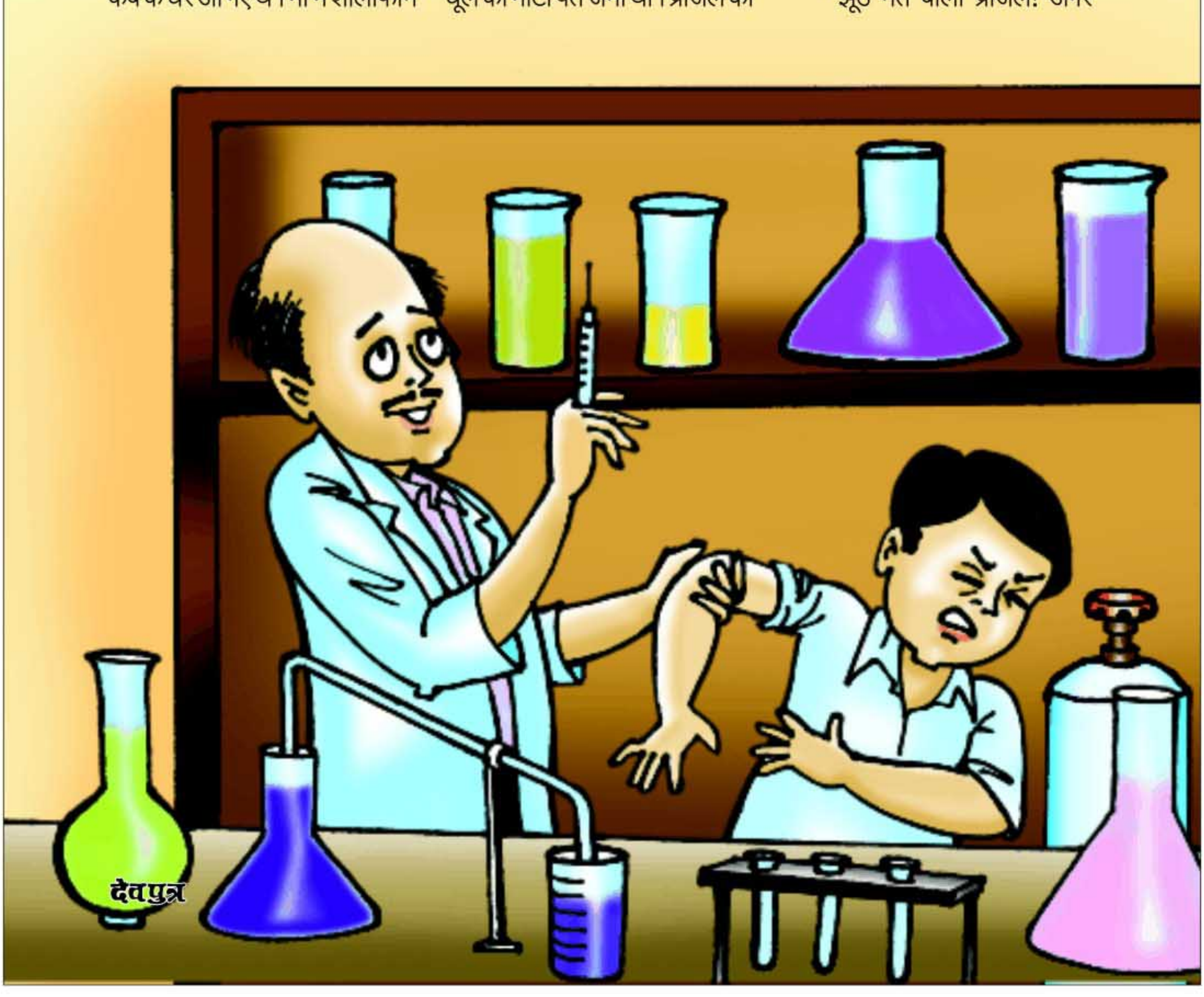

गणित की अतिरिक्त कक्षा लगी थी तो तुम्हारे साथ पढ़ने वाले तेजस्वी और अमित ठीक समय पर घर कैसे आ गए? क्या उनके लिए अतिरिक्त कक्षा नहीं लगी थी? साफ–साफ नहीं कहते कि तुम कहीं खेलने चले गए थे।''

''क्षमा करे माँ ! सही बात यह है कि मैं धैर्य के साथ मैदान में फुटबाल खेलने चला गया था।''

यह कोई आज की बात नहीं थी। प्रांजल इससे पहले भी खूब झूठ बोलता रहा था। अभी कुछ दिन पहले ही उसने पिताजी से शाला में लगने वाले बाल मेले के बहाने तीन सौ रुपये मांगे थे। माँ ने जब शाला में प्राचार्य दीदी से पूछा तो उन्होंने बताया– ''शाला में कोई बाल मेला नहीं लग रहा है।''

बेचारा प्रांजल! उसका झूठ एक बार फिर खुल गया। माँ ने पूछा– ''प्रांजल! तुमने झूठ क्यों बोला? तुम्हारी शाला में तो कोई बाल मेला नहीं लग रहा है।''

'' दरअसल,माँ मेरे दोस्त मुझसे बहुत दिनों से 'ट्रीट ' मांग रहे हैं। उन्हें 'ट्रीट ' देने के लिए मुझे रुपयों की जरूरत है।''

''तो तुमने सीधे कह दिया होता। तुम्हें रुपये मिल जाते।'' माँ ने कुछ गुस्से में कहा।

लेकिन झूठ बोलना तो प्रांजल की आदत में शामिल हो गया था। वह छोटी– छोटी बातों के लिए झूठ बोलता था।

एक दिन शाम को पिताजी के घर आने पर। प्रांजल बोला– ''पिताजी ! मैं अपने दोस्त शशांक के घर जा रहा हूँ। थोड़ी देर में आ जाऊँगा।''

लेकिन प्रांजल देर तक घर नहीं आया। माँ–पिताजी को चिन्ता सताने लगी। शशांक का घर पड़ोस में ही था। पिता शशांक के घर पहुँचे। उन्होंने शशांक से पूछा तो वह बोला – ''काका! प्रांजल तो मेरे घर आया ही नहीं। हाँ मैंने उसे चौराहे पर वीडियो गेम की दुकान पर जाते देखा है।''

बस, पिताजी प्रांजल को ढूँढने चौराहे की ओर चल पड़े। उन्होंने वीडियो गेम की दुकान पर देखा सच–मुच प्रांजल वहाँ वीडियो गेम खेल रहा था। पिताजी ने प्रांजल को खूब डाँट लगाई। बोले– ''प्रांजल! जब तुम्हें वीडियो गेम ही खेलना था तो तुमने शशांक के घर जाने का बहाना क्यों बनाया? बेटा!झूठ बोलना बुरी बात है।''

''गलती हो गई पिताजी ! अब मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा। '' प्रांजल ने कहा।

लेकिन प्रांजल का झूठ बोलना जारी रहा। माँ पिताजी प्रांजल की झूठ बोलने की आदत से सचमुच बहुत दुखी थे। वे उसे साथ लेकर एक मनोचिकित्सक के पास गए। सारी बात सुकर मनोचिकित्सक ने प्रांजल से कुछ बातें पूछी। फिर मनोचिकित्सक बोला – ''बच्चे इस उम्र में झूठ बोलते ही हैं। प्रांजल जब बड़ा हो जाएगा और उसे कुछ समझ आ जाएगी तब वह झूठ बोलना अपने आप बन्द कर देगा। आप परेशान न हों।''

लेकिन मनोचिकित्सक की बात से प्रांजल के पिताजी को तसल्ली नहीं हुई। वे स्वयं जीव वैज्ञानिक थे। उन्होने सोचा– 'क्यों न मैं एक ऐसा सीरम तैयार करूँ जो प्रांजल को कभी झूठ बोलने ही न दे। अगर मैंने यह सच का सीरम बना लिया तो फिर दुनिया का कोई भी बच्चा झूठ नहीं बोलेगा और सचमुच मेरे वारे न्यारे हो जाएंगे।'

बस, फिर क्या था!

प्रांजल के पिता को सच का सीरम बनाने की धुन ही सवार हो गई। अब जब देखो तब वे घर पर बनी अपनी प्रयोगशाला में जुटे रहते। परखनली में नए–नए रसायनों के परीक्षण करते रहते।

जल्दी ही उन्होंने मानव रक्त का परीक्षण कर उस जीन को पहचान लिया जो झूठ बोलने के लिए मनुष्यों को प्रेरित करता है। फिर महीनों तक मेहनत करने के बाद उन्होंने सच का सीरम भी तैयार कर लिया जिसका इंजेक्शन देने पर कोई भी झूठ नहीं बोल सकता था।

बस, अब सच के सीरम का परीक्षण होना बाकी था और पिताजी को इसके लिए प्रांजल से बढ़िया और कोई नहीं लगा।

एक दिन पिताजी ने कहा– ''बेटा प्रांजल! मैंने एक ऐसा सीरम तैयार किया है जिसका इंजेक्शन देने पर कोई भी बच्चा झूठ नहीं बोल सकता। जानवरों पर मैं इसका परीक्षण नहीं कर

सकता क्योकि वे बोल नहीं सकते और उनका झूठ पकड़ा नहीं जा सकता। सच के सीरम का परीक्षण करने के लिए कोई भी 'गिनी पिग' बनने के लिए तैयार नही हैं। इसलिए अब परीक्षण मुझे तुम पर ही करना होगा। वैसे भी तुम्हें झूठ बोलने की आदत है न।''

बेचारा प्रांजल। आखिर पिताजी से सच के सीरम का इंजेक्शन लगवाने के लिए तैयार हो गया। पिताजी ने प्रांजल के सीरम का इंजेक्शन लगाया। फिर पोलीग्राफ मशीन चालू कर उससे कुछ प्रश्न पूछे और झूठ–सच को परखने लगे।

जल्दी ही सच के सीरम ने अपना असर दिखा लिया। प्रांजल पिता के प्रश्नों का ठीक – ठीक जवाब दे रहा था। अब वह बिल्कुल सच बोल रहा था। कुछ दिनों बाद प्रांजल ने झूठ बोलना बिल्कुल छोड़ दिया।

प्रांजल पर सीरम का असर देखकर पिताजी खूब उत्साहित थे। उन्होंने वैज्ञानिकों को अपने सीरम की जानकारी दी। जल्दी ही उन्हें सीरम बेचने के प्रस्ताव भी मिलने लगे। पुलिस और गुप्तचर ब्यूरो के अधिकारियों को प्रांजल के पिता का बनाया सीरम बड़े काम का लगा। दवा कम्पनियों में भी उसे खरीदने की होड़ मच गई। प्रांजल के पिता ने करोड़ों डालर में सच के सीरम का फार्मूला दवा कम्पनियों को बेच दिया।

एक दिन पड़ोस में रहने वाले गुप्ता जी प्रांजल के पिता से मिलने घर आए। वे सच का सीरम बनाने के लिए बधाई देना चाहते थे। लेकिन पिताजी की गुप्ताजी से बोलचाल बन्द था। वे उनसे मिलना नहीं चाहते थे।

पिता ने प्रांजल से कहा– ''बेटा प्रांजल! गुप्ता जी से कहना कि पिताजी घर पर नहीं हैं। बाहर गए हैं। '' पिता साफ झूठ बोल रहे थे।

प्रांजल ने बाहर खड़े गुप्ता जी से कहा– ''काका! आइए, पिताजी घर के भीतर है।''

गुप्ता जी प्रांजल के पिता को सच का सीरम बनाने के लिए बधाई देकर चले गए। लेकिन पिता गुस्से में बोले– ''प्रांजल ! तुमने गुप्ता जी से यह क्यों कहा कि मैं घर पर हूँ?''

''पिताजी,आप मुझसे झूठ बोलने के लिए कह रहे थे लेकिन आपने मुझे सच के सीरम का इंजेक्शन दे दिया है इसलिए मैं चाहकर भी झूठ नहीं बोल सकता।'' प्रांजल ने कहा।

''अरे! मैं तो भूल ही गया था। ''पिताजी बोले।

''पिताजी ! सच यह है कि बच्चों से ज्यादा बड़े लोग झूठ बोलते हैं। वे ही बच्चों को झूठ बोलना सिखाते हैं।''

प्रांजल की बात सुनकर पिताजी मुँह बांए देखने लगे। कुछ क्षणों तक वे सोच में डूब गए। फिर बोले – '' हाँ तुम ठीक कह रहे हो प्रांजल। दरअसल, सच के सीरम की जरूरत बच्चों को नहीं बल्कि हम बड़ों को ज्यादा है। अब सच के सीरम का इंजेक्शन मैं स्वयं को भी लगाऊँगा।''

प्रांजल के चेहरे पर एक विजयी मुस्कान खेलने लगी।

● मुरादाबाद (उ.प्र.)